आचार्य महासेन

जीवन-परिचय : आचार्य महासेन लाटवर्गट या लाड़वागड़ संघ के आचार्य थे। प्रद्युम्नचरित की कारंजाभंडार में जो प्रशस्ति दी हुई है, उससे ज्ञात होता है कि लाटवर्गट संघ में सिद्धान्तों के पारगामी जयसेन मुनि हुए और उनके शिष्य गुणाकरसेन थे। इन्हीं गुणाकरसेन के शिष्य महासेनसूरि हुए, जो राजा मुंज द्वारा पूजित थे और सिन्धुराज ने उनके चरणकमलों की पूजा की थी।

आचार्य महासेन सिद्धान्तवादी, वाग्मी और कवि थे। यशस्वियों द्वारा मान्य और सज्जनों में अग्रणी थे। ये सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र के स्वामी और भव्यरूपी कमलों को विकसित करनेवाले बान्धव थे।

'प्रद्युम्नचरित' की प्रशस्ति में काव्य के रचनाकाल का निर्देश नहीं किया, पर मुंज और सिन्धुल का निर्देश रहने से अभिलेख और इतिहास के साक्ष्य द्वारा समय-निर्णय करने की सुविधा प्राप्त है, जिसके आधार पर हम कह सकते हैं कि आचार्य महासेन का समय 10वीं शती का उत्तरार्द्ध है।

रचना-परिचय : महासेन ने प्रद्युम्नचरित काव्य की रचना की और राजा के अनुचर विवेकवान मधन ने इसे लिखकर कोविदजन (विद्वानों) को दिया।

प्रद्युम्नचरित के प्रत्येक सर्ग के अन्त में आनेवाली पुष्पिका में लिखा है कि- सिन्धुल के महामात्य पर्पट की प्रेरणा से ही प्रस्तुत काव्य निर्मित हुआ है।

1. प्रद्युम्नचरित : आचार्य महासेन के 'प्रद्युम्नचरित' महाकाव्य उपलब्ध में 14 सर्ग हैं। इसमें श्रीकृष्ण के पुत्र प्रद्युम्न कुमार का जीवन-परिचय अंकित किया गया है, जो कामदेव थे। इस काव्य की कथावस्तु का आधार हरिवंशपुराण है। काव्य का कथा भाग बड़ा ही सुन्दर एवं रस और अंलकारों से अलंकृत है। कथा-नायक का जीवन अत्यन्त पावन एवं प्रेरक रहा है।